स्टूडेन्टस नें यह समझा की टीचर आया हुआ है। यह तो बच्चे जानते है वो बाप भी है। सिक्षक भी है और सुप्रीम सतगुरु भी है। बच्चों की स्मृती मे है, परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कायदा कहता है कि जब एक बार जान गये कि टीचर है, अथवा यह बाप है। गुरु है। तो फिर कब भूल नही सक्ते। परन्तु यहाँ माया भुला देती है। अज्ञान काल मैं कब माया नही भुलाती। बच्चे कब भी भूल नही सकते कि हमारा यह बाप है। उनका यह आक्यूपेशन है। बच्चे को तो रवुशी रहती है, हम बाप के धन का मालिक हूँ। भल रवुद भी पढ़ते है परन्तु बाप की प्राप्टी तो मिलती है नां। यहां भी तुम पढ़ते हो। और बाप की प्राप्टी भी मिलती है। तुम राजयोग सीरव रहे हो बाप दवारा। निश्चय हो जाता है मै बाप का हूँ। बाप ही सदगती का रास्ता बता रहे है। यह बातें भूलनी नही चाहिये। जो बाप सुनाते है वही सुनना चाहिये। यह जो बन्दरों को दिखाते है हेयर नो ईविल, सी नो ईविल', है तो मनुष्यों की बात। बाप कहते है आसुरी बातें मत बोलो। नां बोलो, नां सुनो, अब आसुरी बातें तो बहुत है। कौनसी बातें नही सुननी है? बाप के लिये जो कहते है सर्वव्यापी है भित्तर-ठिक्कर मै है, ऐसी बातें बिल्कुल मत सुनो। नां सुनेंगे तो नां पढ़ेंगे। यह तो बाप का बहुत डिसरिगार्ड करते है। आगे हेयर नो ईविल... बन्दरों का बनाते थे। अभी तो मनुष्यों का भी बनाते है। कुमारी भी नलनी का चित्र बनाया हुआ है। तो बाप की ग्लानी की बातें मत सुनो। बाप कहते है मेरी कितनी ग्लानी करते है। तुमको मालूम है कृष्ण के भक्त कृष्ण के आगे धूप जगाते है तो राम के भक्त राम का नाक बन्द कर देते है। एक दो की बांस भी अच्छी नही लगती। आपस मे जैसे दुश्मन हो जाते। अब तुम हो राम वंशी। दुखियाँ है सभी रावण वंशी। यहाँ धूपआद की तो बात नही है। तुम जानते हो बाप को सर्वव्यापी कहने से कितना दुर्गती को पाया है। कह देते ठिक्कर भित्तर सबमें परमात्मा है। कहते है नां कुम्हारी तो ठिक्कर बुधी है नां। ठिक्कर बुधी होने से फिर कह देते ठिक्कर भित्तर मे भगवान है। अब ठिक्कर भित्तर मे कोई आत्मा थोड़ेई है जो उनमे बुधी है। यह ज्ञान रत्न नही परन्तु पत्थर है। पत्थर बुधी तो देते है। तो अब बाप कहते है भक्ति मार्ग की बातें मत सुनो। बाप की भी ग्लानी तो देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। ऐसी बातें नां सुनो नां सुनाओ। यह बेहद का बाप बैठ समझाते है। बाप को ही याद करना पड़े। बाप कहते है मै जो हूँ जैसा हूँ यथार्थ रीती समझो। मुझे कोई नही जानते। बच्चों मे भी नम्बरवार है। बाप को यथार्थ रीती याद करना है। वो भी इतनी छोटी बिन्दी है। इनमें यह सारा पार्ट भरा हुआ है। यथार्थ रीती बाप को जान कर और याद करना है। अपने को भी आत्मा समझना है। भल हम बच्चे है। परन्तु ऐसे नही कि बाप की आत्मा बड़ी हमारी छोटी है। भल बाप नालेज फुल है परन्तु आत्मा कोई बड़ी छोटी नही हो सक्ती। तुम्हारी आत्मा मे भी नालेज रहती है। परन्तु नम्बरवार। स्कूल मे भी नम्बरवार पास होते है नां। जीरो(0) नही होती कुछ नां कुछ कम मार्क्स ले लेते है। बाप कहते है मै जो तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ यह प्रायःलोप हो जाता है। फिर भी चित्र है। शास्त्र भी भक्ति मार्ग के बनाये हुये है उनमे थोड़ी ही है। ईश्वर को सर्वव्यापी कहना यह है ग्लानी की बात। ऐसी बातें सुनने से हम कान बन्द कर देते है। बाप आत्माओं को कहते है हेयर नो ईविल... इस आसुरी दुनिया का क्या देरवना है? इस छी-2 दुनिया से आरवें बन्द करनी है। अब आत्मा को स्मृती आई है। यह है पुरानी छी-छी दुनियां। इससे क्या कनेक्शन रखना है। आत्मा की बुधी को स्मृती आई है कि इस दुनिया को देरवते भी नही देरवना है। अपने शान्ती धाम और सुरव धाम को याद करना है। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। वो स्मरण करना है। भक्ति मार्ग में भी सुबह उठ कर माला फेरते है। सुबह का मुहूर्त अच्छा समझते है। ब्राह्मणों का मुहूर्त। ज्ञान की बातें करना। जो फिर भक्ति मार्ग में चलती है। ब्रह्मा भोजन की भी महिमा है। ब्रह्म भोजन नही। ब्रह्मा भोजन। तुमको भी कोई-2 ब्रह्मा कुमारीयों के बदले ब्रह्म कुमारियाँ कह देते है। समझते नही कि ब्रह्मा के बच्चे तो ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ होंगी नां। ब्रह्म तो तत्व रहने का ठिकाना है। उनकी

13-2-67

क्या महिमा होगी। मनुष्यों की वुधी बिलकुल ही भ्रष्ट है। भ्रष्टाचार से जन्म होता है इसीलिये भ्रष्टाचारी कहा जाता है। भक्ति मार्ग में कितनी ग्लानी करते है। बाप भी आकर उलैहना देते है, तुम एक तरफ पूजा भी करते हो। दूसरी तरफ फिर सबकी ग्लानी भी करते हो। ग्लानी करते-2 तमोप्रधान बन गये हो। तमोप्रधान भी बनना ही है। सतोप्रधान बाद ~~फिर सतो रजो तमो~~ फिर सतो रजो तमो में जरूर आना है। फिर चक्र रपीट होगा ~~[illegible]~~ जब कोई बड़े आदमी आते है तो उनको चक्र पर जरूर समझाना है। यह चक्र 5000 वर्षों का ही है। इसके ऊपर बहुत अटेन्शन देना है। रात के बाद दिन जरूर होना ही है। यह हो नही सकता कि रात के बाद फिर दिन ना हो। कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना ही है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट होती है। तो बाप समझाते है मीठे-2 बच्चों अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सब कुछ करती है पार्ट बजाती है। यह किसीको भी पता नही। अगर हम पार्ट धारी है तो नाटक की आद मध्य अन्त को जरूर जानना पड़े। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट होती है तो ड्रामा ही ठहरा ना। सीनरी वा सीनरी वो ही रिपीट होगा जो पास्ट हो गया है। यह बातें और कोई समझ ना सके। कम बुधी वाले इम्तहाना पास ही होते है। फिर टीचर भी क्या कर सकते है? टीचर को कहेंगे कि कृपा करो वा आशीर्वाद करो। यह भी पढ़ाई है। इस गीता पाठशाला में यह भगवान राजयोग पढ़ाते है। कलियुग को बदल कर सतयुग जरूर बनना है। ड्रामा अनुसार बाप को भी आना है जरूर। बाप कहते है मै कल्प-2 संगम युग पर आता हूँ। और थोड़ेही यह कह सकते है कि मै सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान सुनाने आया हूँ। अपने को शिवोहम कहते है परन्तु उससे क्या होगा। शिव बाबा तो आते ही है पढ़ाने लिये। सहज राजयोग सिखाने लिये। कोई भी साधु सन्त आद को शिव वा भगवान नही कहा जा सकता। ऐसे तो बहुत कहते है हम कृष्ण है। हम लक्ष्मी है। अब कहाँ तो वो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स। कहाँ यह कलियुगी पतित। ऐसे थोड़ेही कोई इनमें भगवान है। ऐसे-2 मनुष्यों के पास [illegible] नही। तुम मन्दिरों में भी जाकर पूछ सकते हो यह जो सतयुग में राज्य करते थे फिर अब कहाँ गये? सतयुग के बाद जरूर त्रेता द्वापर कलियुग हुआ। सतयुग में सूर्यवंशी राज्य था फिर चन्द्र वंशी राज्य हुआ। यह सब नालेज तुम बच्चों की बुधी में है। इतने ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ है, जरूर प्रजापिता भी होगा। फिर ~~[illegible]~~ ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टी रचते है। क्रियेटर ब्रह्मा को नही कहा जाता। वो फिर गाड फादर है। कैसे रचते है, वो तो बाप सम्मुख बैठ ही बैठ समझाते है। यह शास्त्र तो बाद में बनते है। जैसे क्राईस्ट ने समझाया। उनका बाईबल बन गया। बाद में बैठ कर गायन करते है। अब क्राईस्ट का क्या गायन करेंगे। वो कोई गुरू वा मैसन्जर नही है। गति वा सदगती कोई 5, 7 की नही होती सर्व का सदगती दाता। सर्व का लिबरेटर एक पतित पावन बाप गाया हुआ है। उनको याद करते है :- कि हे गाड फादर रहम करो। ऐसे नही कहेंगे हे क्राईस्ट रहम करो। फादर एक होता है। यह है सारे वर्ल्ड का फादर। मनुष्यों को पता नही है कि सर्व के दुःखों को कौन दूर करने वाला है। बाप बैठ समझाते है, तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। सारे चक्र का पता पड़ जाता है। बाप बैठ समझाते है तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। इस समय सभी आत्मायें अपना-2 पार्ट बजाकर तमोप्रधान बन गई है। अब है ही तमोप्रधान दुनियाँ। जड़जड़ीभूत अवस्था को पाई हुई है। सृष्टी भी पुरानी मनुष्य भी तमोप्रधान पुराने हो गये है। यह है ही आयरन ऐज्ड वर्ल्ड। गोल्डन ऐज था ना। फिर होगा जरूर। यह विनाश हो जावेगा। वर्ल्डवार होगी। अनेक कुदरती आपदायें भी होती है। समय तो यही है? कितनी मनुष्य सृष्टी वृधी को पाई हुई है। अन्न है नही। आगे चल कर निश्चय करेंगे फिर जाँच करेंगे। तुम तो कहते रहते हो भगवान आया हुआ है। 30 वर्षों से। तुम चैलेंज देते हो। ब्रह्मा द्वारा एक आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। तुम शोर तो मचाते हो परन्तु कदरों को सुनने में अजन देरी है। ड्रामा अनुसार सब हो रहा है। दैवी गुण [illegible] धारण करने है। तुम जानते हो पहले हमारे में कोई गुण नही थे। नऊगुण अवगुण है [illegible]

13-2-67

कितना खराब करता है। माया की कुश्ती चलती है। नाँ चाहते भी माया का तूफान गिरा देता है। गले से पकड़ झट गटड़ में गिरा कर काला मुँह कर देता है। आयरन ऐज्ड तो है नाँ। काला मुँह ही कहेंगे। सांवरा मुँह नही कहेंगे। कृष्ण के लिये दिखाते है सर्प ने डसा तो सांवरा हो गया। इज्जत रखने लिये सांवरा कह देते है। काला मुँह दिखाने से इज्जत चली जावे। तो दूर देश निराकार देश से मुसाफिर आये है। आयरन ऐज्ड दुनिया, काले शरीर में आकर इनको फिर गोरा बनाते है। अब बाप कहते है तुमको फिर सतोप्रधान बनना है। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और विष्णु पुरी के मालिक बन जावेंगे। यह ज्ञान की बातें समझने की है। बाबा रूप भी है तो बसन्त भी है। तेजोमय बिन्दी रूप है। उनमें ज्ञान भी है। नाम रूप से न्यारा तो है नही। उनका रूप भी है। यह दुनिया नही जानती। बाप बैठ तुम्हें समझाते है तुम्हें भी आत्मा कहते है सिर्फ सुप्रीम आत्मा कहेंगे परम-आत्मा सो हो जाता है परमात्मा। अब बाप बैठ समझाते है। यह बाप भी है टीचर भी है। कहते भी है नालेज फुल अर्थात सबके दिलों को जानने वाला। अगर परमात्मा सर्वव्यापी है तो फिर तो सभी नालेज फुल हो गये। फिर इस एक को क्यूँ कहते। मनुष्यों की कितनी तुच्छ बुधी है। ज्ञान की बातों को बिलकुल ही नही समझते है। बाप ज्ञान और भक्ति का कन्ट्रास्ट बैठ सुनाते है। पहले ज्ञान। दिन, सतयुग त्रेता। फिर है दवापुर कलियुग रात। ज्ञान से सदगती। फिर भक्ति से होती है दुर्गती। दुर्गती में ज्ञान हो नही सकता। ज्ञान और भक्ति का किसीको भी पता नही पड़ता। यह राजयोग का ज्ञान है। हठयोगी समझा नही सकते। नाँ गृहस्थी समझा सकेंगे। क्यूँ कि अपवित्र है। अब फिर राजयोग कौन सिखावें? जो कहते है मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। निवृती मार्ग का धर्म ही अलग है। वो प्रवृती मार्ग का ज्ञान कैसे सुनावेंगे। हर बात में ठगी ही ठगी झूठ ही झूठ लगा हुआ है। गाया भी जाता है झूठी माया... इस समय ही कहा जाता है गाड इज ट्रुथ। सतयुग में कोई नही कहेंगे। जो जो बातें भक्ति मार्ग में कही जाती है वो कोई भी सतयुग में नही कहेंगे। यहाँ सब कहते है गाड फादर इज ट्रुथ। बाप ही सच सुनाने वाले है। आत्मा को बाप की स्मृती आई है। इस लिये ही हम बाप को याद करते है कि आकर के सच्ची-2 कथायें सुनाओ नर से नारायण बनने की। यह तुमको सत्य नारायण की कथा सुनाता हूँ नाँ? आगे तुम झूठी कथायें सुनते थे। अब तुम सच्ची सुनते हो। झूठी कथायें सुनते-2 कोई नारायण तो बन नही सके। फिर वो सत्य नारायण की कथा हो कैसे सकती है? तो झूठी हुई नाँ। मनुष्य किसीको नर से नारायण बना नही सकते। बाप ही आकर स्वर्ग का मालिक बनाते है। बाप आते भी भारत में है। परन्तु कब आते है यह कोई समझते नही है। शिव और शंकर को मिला कर कहानियाँ बनादेते है। शिव पुराण भी है। गीता कहते है कृष्ण। फिर तो शिव पुराण बड़ा हो गया। वास्तव में नालेज तो गीता में है। भगवानोवाच्य मनमनाभव। यह अक्षर गीता के बिना दूसरे किसी शास्त्र में हो नही सकते। गाया भी जाता है सर्वशास्त्रमयी शिरोमणी गीता। श्रीमत तो है ही भगवान की। यह बातें कोई भी साधु सन्त आद नही जानते। वो सब है भक्ति मार्ग के। साधु है ही साधना करने वाले। उनमें सदगती का ज्ञान हो कैसे सकता है। साधना भी सब एक की करते है। बुधी में होता है कि हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। सृष्टी चक्र का तो ज्ञान है नही। फिर वो क्या कथायें सुनावेंगे। बाप कहते है लीन कैसे हो सकते है? आत्मा तो विनाशी होती नही। आत्मा है ही अविनाशी। यह सब बातें बाप बैठ समझाते है। पहले-2 यह भी बताना चाहिये हम कहते है 10 वर्षों के अन्दर नई श्रेष्टाचारी दुनियां स्थापन होगी। जावेगी। अभी है भ्रष्टाचारी दुनियां। श्रेष्टाचारी दुनिया में कितने कम मनुष्य होंगे। अभी तो कितने ढेर मनुष्य है। उनके लिये विनाश सामने खड़ा है। बाप राजयोग सिखा रहे है। वर्सा बाप से मिलता है। माँगते भी है बाप से। कोई को धन पुत्र होगा, बच्चा होगा कहेंगे भगवान ने दिया है। तो भगवान एक हुआ नाँ। फिर सब में भगवान कैसे हो सकते है। कितनी बातें समझाई जाती है। अब [illegible] ओम